भाकृअनुप–वि.प.कृ.अनु.स. प्रसार प्रपत्र (92/2016)

पर्वतीय क्षेत्रों में चारे के लिए भीमल उगायें

भाकृअनुप- विवेकानन्द पर्वतीय कृषि अनुसंधान संस्थान
(आई.एस.ओ. 9001-2008 प्रमाणित संस्थान)
अल्मोड़ा - 263601 (उत्तराखण्ड)

2016

निःशुल्क कृषक हैल्प लाइन सेवा 1800 1802311

सम्पर्क समय - प्रत्येक कार्य दिवस (प्रातः 10 बजे से सायं 5 बजे तक)

शुष्क पदार्थ के आधार पर इनकी पत्तियों में 18.84 प्रतिशत क्रुड प्रोटीन, 23 प्रतिशत ईथर निष्कर्ष, 2–2.5 प्रतिशत कच्चे तन्तु, 25–27 प्रतिशत कैल्शियम पाया जाता है। एवं कार्बनिक पदार्थों की पाचकता 77.2 प्रतिशत होती है।

आलेख

जे. के. बिष्ट, आर. पी. यादव, एम. एल. राय
एवं टी. मण्डल

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें

निदेशक
भाकृअनुप–विवेकानन्द पर्वतीय कृषि अनुसन्धान संस्थान
अल्मोड़ा– 263601 (उत्तराखण्ड)
दूरभाषः (05962) 230208, 230060
फैक्सः (05962) 231539

सहयोग

पी.एम.ई.सैल

निदेशक, भाकृअनुप–विवेकानन्द पर्वतीय कृषि अनुसन्धान संस्थान, अल्मोड़ा–263601 (उत्तराखण्ड) द्वारा संस्थान के लिए प्रकाशित एवं मैसर्स अपना जनमत, 16 ए, सुभाष रोड, देहरादून (उत्तराखण्ड) दूरभाष : 0135–2653420, मो. : 9837209996 द्वारा मुद्रित।

अतिरिक्त प्रथम तीन वर्ष तक गढ्ढ़े में प्रत्येक साल 2 से 3 बार घास आदि निकालनी चाहिए जिससे पौधे की बढ़वार भली प्रकार हो सके।

कितनी उपयोगी है चारा

इस वृक्ष से लगभग 4 वर्ष की आयु से ही चारा मिलने लग जाता है। इसकी पत्तियां दिसम्बर–जनवरी माह में भी हरी रहती है जबकि अन्य वृक्षों की पत्तियां इस दौरान पाले और अधिक ठंड के कारण सूख जाती है। इस वृक्ष से प्राप्त चारे की मात्रा इसकी कटाई की विधि पर निर्भर करती है। यदि केवल पत्तियां ही निकाली जायें तो लगभग 10–11 किलो हरा चारा प्रति वृक्ष मिल जाता है परन्तु इस विधि में वृक्ष की आयु और आकार बढ़ने के कारण साथ–साथ कठिनाई आने लगती है। इसके अतिरिक्त यदि पत्तियों को छोटी–छोटी शाखाओं सहित काटा जाये, तो इस प्रकार 6–8 किलोग्राम चारा तथा लगभग एक किलोग्राम सूखी लकड़ी प्रति वृक्ष प्राप्त हो जाती है।

भीमल की नयी पत्तियों में सर्वाधिक प्रोटीन पायी जाती है। इसके चारे की मुख्य विशिष्टता यह है कि इसमें टेनिन की मात्रा लगभग न के बराबर होती है। इसकी केवल 3 किलोग्राम पत्तियॉ लगभग 1 किलोग्राम संतुलित दाने के बराबर पौष्टिक होती हैं।

पर्वतीय क्षेत्रों में जाड़ों के महीनों (दिसम्बर–जनवरी) में हरे चारे की उपलब्धता नही के बराबर होती है। यहाँ तक कि इस समय शीतोष्ण घास की वृद्धि दर भी कम हो जाती हैं। ऐसे समय में भीमल वृक्ष से हरा चारा प्राप्त होता है। इतना महत्वपूर्ण चारा होने के कारण इसकी उगाने की विधियाँ और प्रबन्ध के विषय में किसानों को आवश्यक जानकारी उपलब्ध कराकर क्षेत्र में चारे की उपलब्धता बढ़ाई जा सकती है।

भीमल एक मध्यम आकार का सदाबहार, पर्णपाती वृक्ष है। छाल गहरी भूरी, छोटे काश्ठीय शल्कों में उभरी हुई होती है। शाखाएं चिकनी, तथा चमकीले भूरे रंग की होती है। छत्र छोटा तथा फैलावदार होता है, इसकी पुरानी पत्तियां मार्च–अप्रैल तक गिर जाती है तथा अप्रैल–मई में नई पत्तियां निकलनी आरम्भ हो जाती हैं। इस प्रकार इस वृक्ष में पत्ती रहित अन्तराल बहुत कम होता है। फूल नई पत्तियां निकलने के साथ ही आने लगते हैं। इसके फूल पूर्ण रुप से दिसम्बर तक पक जाते हैं।

भूमि कैसी हो ?

यद्यपि भीमल हर तरह की मिट्टी में उग सकता है परन्तु बलुई दोमट में इसकी बढ़वार अच्छी होती है। इसकी अच्छी वृद्धि कि लिए भूमि में पर्याप्त नमी होना आवश्यक है। सिंचित खेतों के किनारे पर लगाए गए पेड़ों की बढ़वार काफी अच्छी होती है।

पौधे कैसे उगायें

बीज द्वारा

इसकी पौध बीज द्वारा तैयार की जाती है। बीज पत्र काफी सख्त होता है। अतः बोने से पूर्व बीज को उपचारित करना आवश्यक होता है। संस्थान में किये गए परीक्षणों से पता चला है कि यदि बीज को 100 पी.पी.एम. जिब्रैलिक ऐसिड के घोल में भींगोकर लगाऐं तो बीजों का अंकुरण अच्छा होता है या बीज को 24 घण्टे तक पानी में भिगोंयें अथवा लगभग 50 से 60 डिग्री सेन्टीग्रेड गरम पानी में 10–12 धण्टे डुबोकर बुआई करें।

उपचारित बीजों को मार्च के प्रारम्भ में समतल क्यारियों में बोया जाता है। पंक्ति से पंक्ति की दूरी 15 सेंटीमीटर रखते हैं। बीज किसी भी दशा में 2 सें. मी. से गहरा नहीं बोना चाहिये। एक वर्गमीटर क्षेत्रफल के लिए 250 ग्राम बीज पर्याप्त होता है। क्यारियों में नियमित रुप से हल्की सिंचाई देते रहना चाहिए। लगभग 10 से 15 दिन के बाद अंकुरण शुरु हो जाता है। अच्छे और स्वस्थ पौधे प्राप्त करने के लिए इनके मध्य की दूरी 10 सें.मी. कर देनी चाहिए। ये पौधे जुलाई तक लगाने योग्य हो जाते हैं। यदि कुछ पौध प्रथम वर्ष में बच जाती है तो इन पौधों के बचे हुए भाग से अगले वर्ष के लिए कृत्रिम प्रवर्धन द्वारा पौधे तैयार किए जा सकते हैं, इसके लिए पौधे की आयु लगभग एक वर्ष होनी जरुरी है।

खेत में कैसे उगायें

तैयार पौधों को जुलाई माह में वर्षा प्रारम्भ होने पर ही लगाना चाहिए। पौधों को क्यारियों से मिट्टी सहित निकाल लेते हैं। यदि पौधे को दूर ले जाना हो, तो इसे गीले जूट बैग में बांध कर ले जाना चाहिए, इससे जड़ों पर लगी मिट्टी नम बनी रहती हैं। भीमल के दो पौधें के बीच की दूरी 2 मीटर रखते हैं। इसे खेत के किनारों ऊर्जा रोपाई कृषि वानिकी के रूप में जा सकता है।

कृषि अयोग्य ढालू भूमि पर भी यह वृक्ष सफलतापूर्वक उगाया जा सकता है। संस्थान में किये गये परीक्षणों में पाया गया है कि ढ़ालू भूमि पर लगभग 1 मीटर व्यास तथा 75 सेंटीमीटर गहरे गढ्ढे बनाकर पौधे लगाने पर इसकी बढ़वार स्थानीय प्रचलित विधि से तैयार किए गए गढ्ढों की तुलना में अधिक होती है। इन गढ्ढों से निकली मिट्टी को ढ़लान की ओर अर्द्धवृत्ताकार मेंढ़ के रुप में जमा कर देते हैं। जो कि वर्षा के पानी के बहाव को कम करने तथा नमी संरक्षण में सहायक होती है। इस मेंड़ पर दलहनी चारा डेस्मोडियम लगा देने पर इससे प्रथम वर्ष से ही लगभग 0.5 से 1.00 किग्रा0 हरा चारा प्रति गढ्ढा मिलना प्रारम्भ हो जाता है साथ ही डेस्मोडियम की जड़ें भूमि कटाव को कम करने में भी सहायक होती हैं। इसके बाद गढ्ढों को मिट्टी तथा गोबर की खाद के 2:1 के मिश्रण से भर दें, साथ ही साथ प्रत्येक गढ्ढे में इसी समय 20–25 ग्राम यूरिया भी भली प्रकार मिला देना चाहिए। इसके